

सहजानंद शास्त्रमाला

पञ्चसूत्री द्वादशी

रचयिता

अध्यात्मयोगी, न्यायतीर्थ, सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री

पूज्य श्री क्षु० मनोहरजी वर्णी "सहजानन्द" महाराज

प्रकाशक

श्री सहजानंद शास्त्रमाला, मेरठ

एवं

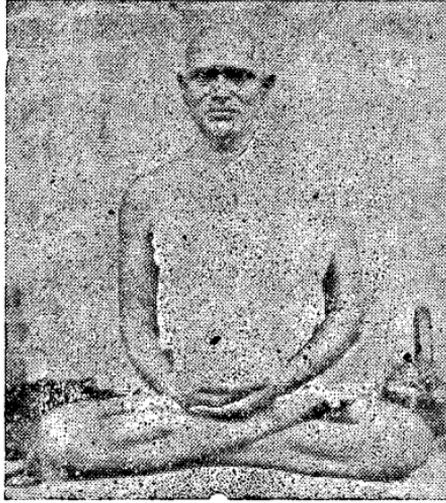
श्री माणकचंद हीरालाल दिगम्बर जैन पारमार्थिक न्यास

गांधीनगर, इन्दौर

Online Version : 001

पञ्चसूत्री द्वादशी

卐
卐
卐
卐
卐
卐
卐
卐
卐



卐
卐
卐
卐
卐
卐
卐
卐
卐

लेखक—

अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री
गुरुवर्य्य पूज्य श्री मनोहर जी वर्णी सहजानन्द महाराज

प्रकाशक:—

सुमेरचन्द जैन, प्रधान मंत्री
भारतवर्षीय वर्णी जैन साहित्यमंदिर
प्रेमपुरी, मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)

न्यौछावर—२० पैसे

❁ आत्म-कीर्तन ❁

अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री शान्तमूर्ति
पूज्य श्री मनोहरजी वर्णी "सहजानन्द" महाराज द्वारा रचित

हूँ स्वतन्त्र निश्चल निष्काम । ज्ञाता द्रष्टा आत्मराम ॥ टेक ॥

मैं वह हूँ जो हैं भगवान, जो मैं हूँ वह हैं भगवान ।

अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यहँ रागवितान ॥१॥

मम स्वरूप है सिद्ध समान, अमित शक्ति सुख ज्ञान निधान ।

किन्तु आशवश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अज्ञान ॥२॥

सुख दुख दाता कोई न आन, मोह राग रूष दुःख की खान ।

निजको निजपरको पर जान, फिर दुखका नहिं लेश निदान ।३॥

जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम, विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम ।

राग त्यागि पहुँचूँ निज धाम, आकुलताका फिर क्या काम ॥४॥

होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जगका करता क्या काम ।

दूर हटो परकृत परिणाम, 'सहजानन्द' रहूँ अभिराम ॥५॥

(नोट:—शास्त्र प्रवचन, सामायिक, समारोह, विद्यालय, प्रार्थना आदिके
समय सामूहिक रूपमें बोलिये । तथा किसी विपत्तिके समय शान्त्यर्थ
किसी अर्ध चौथाई या पूर्ण छन्दका पाठ मनन कीजिये)

(१)

१- मैं देहसे निराला, अमूर्त ज्ञानमात्र हूँ ।

२- मैं ज्ञानको ही करता हूँ व ज्ञानको ही भोगता हूँ ।

३- ज्ञानका भी करना भोगना क्या ?

ज्ञानन परिणामन होता रहता है ।

४- परमार्थतः मैं अविकार ज्ञानस्वभाव हूँ ।

५- हे अविकार ज्ञानस्वभाव ! प्रसन्न होओ और जन्म-
मरणका संकट दूर करो ।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

(२)

- १- सर्वाविशुद्ध ज्ञानमात्र मुझमें किसी अन्यका प्रवेश ही नहीं, अतः मैं निर्भर हूँ ।
- २- जब मुझमें किसी अन्यका प्रवेश ही नहीं, तब मेरा किसी अन्यसे रंच भी संबंध नहीं, मेरा तो मेरा ज्ञान-घन आत्मा ही सर्वस्व है ।
- ३- जब मेरा किसी अन्यसे रंच भी संबंध नहीं, तब मैं व्यर्थ अनर्थ मिथ्या विकल्पोंको करके क्यों बरबाद होऊँ ।
- ४- मुझे मेरा विकल्पोंके रूपमें अनुभव मत होओ, कर्म-विपाकके रूपमें अनुभव मत होओ ।
- ५- मुझे मेरा अनुभव ज्ञानाकाररूपमें ही होओ, निर्विकल्प ज्ञायक भाव ही मेरे अनुभवमें रहो ।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

(३)

- १- अज्ञानसे पूर्वबद्ध, पृथ्वीपिण्डसमान कर्मोंके निषेक जब उदयागत होते हैं तब उनका उन्हींमें विस्फोट परिणामन होता है ।
- २- उदयागत, विस्फुटित कर्म मुझ ज्ञानज्योतिर्मय आत्मामें तामसरूपसे प्रतिविम्बित होते ही ज्ञानस्वच्छता तिरोहित हो जाती है ।
- ३- ज्ञानस्वच्छता तिरोहित हो जानेसे उपयोग स्वभावसे च्युत होकर प्रतिभासित कर्मविपाकको आत्मरूपसे ही मानने लगता है ।
- ४- कर्मविपाकको आत्मरूपसे मानते ही आश्रयभूत बाह्य पदार्थको विषय करके विकारकीं व्यक्त मुद्रा बनती है ।
- ५- कर्मविपाक भिन्नप्रदेशी है उससे मैं अत्यन्त भिन्न हूँ, प्रतिभासस्वरूप हूँ । मुझमें संकटका काम ही नहीं ।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

(४)

- १- मेरे उपयोगमें ज्ञानाकार ही रहे ताकि कर्मविपाक भलक भी न दे सके ।
- २- कर्मविपाक भलक भी जाय तो भी वह पर द्रव्य है उससे मुझ ज्ञानज्योतिर्मय ब्रह्मका क्या वास्ता ।
- ३- भिन्न ज्ञेय कर्मविपाककी कल्मषता भी बने, तो वह बाह्य वस्तु विषय हुए बिना मुद्राशून्य अबुद्धिपूर्वक होकर खिर जावे ।
- ४- कर्मविपाक बुद्धिगत भी हो तो भी वह बाहर ही बाहर लोट कर निकल जावे, वह तो बरबाद करनेके लिये आता है उससे मुझे कोई ममत्व नहीं
- ५- मैं तो ज्ञानस्वच्छतामात्र हूँ, पूर्वदोषसे बद्ध कर्मोंका विपाक भी भलके तो भलको, ज्ञानस्वच्छता है सो भलकेगा, किन्तु अब मैं ज्ञानस्वच्छताके विवेक पर टिका ही रहूंगा ।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

(५)

- १- मैं ज्ञानमात्र हूँ, उपयोगमात्र हूँ, इसमें झंझट क्या, इसमें संकट क्या ?
- २- ज्ञानका ही सर्वदशाओंमें परिणामन है, सुख भी ज्ञानके परिणामनकी एक मुद्रा है, दुख भी ज्ञानके परिणामन की एक मुद्रा है, सुख दुखसे रहित विशुद्ध आनन्द भी ज्ञान के परिणामनकी एक मुद्रा है ।
- ३- ज्ञानका ही सर्वदशाओंमें परिणामन है, विपरीत श्रद्धान भी ज्ञानके परिणामनकी एक मुद्रा है, शुद्ध श्रद्धान भी ज्ञानके परिणामनकी एक मुद्रा है, रागद्वेष परिणामन भी ज्ञानके परिणामनकी एक मुद्रा है, वीतराग परिणामन भी ज्ञानके परिणामनकी एक मुद्रा है ।
- ४- ज्ञान ज्ञानस्वरूपके उपयोगमें न रहकर बाह्य विकल्प किया करे यह भी ज्ञानके परिणामनकी एक मुद्रा है और ज्ञान ज्ञानस्वरूपके उपयोगमें रहकर निर्विकल्प रहे, निराकुल रहे वह भी ज्ञानके परिणामनकी एक मुद्रा है ।
- ५- मेरे ज्ञानका सहज ही, बिना बनावट, जो परिणामन हो वही मेरा सत्य है, वही मेरा कब्याण है ।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

(६)

- १- मैं ज्ञानस्वरूप हूँ । ज्ञान अज्ञानरूप कभी नहीं होता, अज्ञानरूपमें अपना स्वरूप स्वीकार करने वाला ज्ञान ही अज्ञानरूप कहलाता है ।
- ३- कर्मविपाक सब अज्ञानरूप हैं, अज्ञानमय कर्मविपाक परिणाम पौद्गलिक कर्मोंमें रहो । मैं ज्ञानस्वरूप हूँ, मैं अपने ज्ञानस्वरूपमें ही रहूँगा ।
- ३- मुझमें कर्मविपाक भी झलक गया तो झलक जाओ मेरेमें सारे विश्वको झलकानेकी योग्यता है, हाँ झलकने से 'आगेकी उद्वण्डता तो मेरी हो सकती है, कर्म विपाकका काम तो कर्ममें ही परिसमाप्त है । मैं बरबाद होने की उद्वण्डता क्यों करूँ, मैं तो ज्ञानस्वरूप उपयुक्त होनेकी ही वृत्ति रखूँगा ।
- ४- मुझ ज्ञानमें जो प्रतिभासित निज परिणाम है वह भी मेरा नहीं, सो वह भी मेरा काम नहीं । मैं तो प्रतिभासस्वरूप हूँ, ज्ञानाकार स्वच्छतामात्र हूँ यही वृत्ति रहा करे यही मेरा काम है, जो कि अगुरुलघुगुणके निमित्त से होने वाला अन्तः परिणामरूप मेरा अर्थपर्याय है ।
- ५- मैं सर्वविशुद्ध ज्ञानघन अन्तस्तत्त्व हूँ, कृतकृत्य हूँ, परिपूर्ण हूँ, स्वयं असीम सहज आनन्दमय हूँ ।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

(७)

- १- मेरेमें कष्टका क्या काम, मेरा तो आनन्द स्वभाव है ।
- २- जो भी विवशता व आकुलता अनुभवमें आती है उसका कारण किसी न किसी बाह्य वस्तुमें इच्छा होना है ।
- ३- धन, यश व इन्द्रियविषय इनकी इच्छा न हो तो कष्ट का फिर कोई भी स्रोत नहीं रहता ।
- ४- आत्मन् ! कोई कष्ट मत उठाओ, सत्य ज्ञान जागृत करो और अपनेको ज्ञानमात्र एवं निर्भार अनुभव करो ।
- ५- मैं सहजसिद्ध, ज्ञानघन, आनन्दस्वरूप, निरञ्जन, पावन चिज्ज्योति हूँ ।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

(८)

- १- प्रभो ! आत्मन् ! दुःख मानते हुए, विकल्प करते हुए
में तुम्हें कुछ लाज नहीं आती ?
- २- कहाँ तो तेरा पवित्र ज्ञानानन्दस्वभाव और कहाँ यह
वर्तमान कायरता ।
- ३- प्रिय- आत्मन् ! अपने स्वभावकी ओर आनेका साहस
बना, जगतमें चेतन या अचेतन पदार्थ कुछ भी तेरा
सहाय नहीं है ।
- ४- मेरा देव, मेरा गुरु, मेरा हितू, मेरा रक्षक, मेरा
शरण मात्र निज चैतन्यस्वभावकी उपासना है ।
- ५- मैं दिव्य तेजोमय, स्वयंबुद्ध, कल्याणमय, स्वयं सुरक्षित
सहज शरणभूत सर्वविशुद्ध चैतन्यस्वरूप हूँ ।

ॐ शुद्धं चिदस्मि ।

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

(९)

- १- सबसे दृष्टि मोड़कर अपनी ओर प्रवेश कर परिपूर्ण
स्वतन्त्र ज्ञानस्वरूप अनुभवं यही वास्तविक वीरता है ।
- २- किसी भी पर पदार्थको विषय बना कर आकुलता
करूँ यह कायरता है ।
- ३- किसीका कोई अन्य साथी नहीं और कायरका तो
साथी ही क्या हो कोई, उसकी तो लोग मजाक उड़ाते
हैं । कायर बननेमें किसी भी प्रकारका लाभ नहीं ।
- ४- मैं सबसे निराला, अपनेमें पूर्ण, अपने ही उत्पाद व्यय
घ्रौव्यको रखने वाला स्वयं सुरक्षित हूँ ।
- ५- ज्ञानानन्दसे भरपूर, परमात्मत्वसम्पन्न मुझमें यह मैं
परसे सदा अवाधित हूँ ।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

(१०)

- १- बाहर किसीका कुछ भी परिणामो, उससे मुझे क्या ?
 २- मेरा तो मेरे विशुद्ध चैतन्यस्वरूपसे अतिरिक्त कुछ भी नहीं है ।
 ३- मेरा बिगाड़ किसी भी अन्य वस्तुसे नहीं, मैं ही अपने स्वरूपसे चिगकर अपनेको विविध कल्पनारूप अनुभवता हुआ कष्ट पाता हूँ ।
 ४- जैसा मेरा सहज त्वरूप है, विशुद्ध चैतन्यधातु है उसी रूप अनुभवूँ, फिर कष्टका निशान भी नहीं ।
 ५- मैं चित्प्रकाशमात्र, निर्लेप, निराला, अबाधित शुद्ध अन्तस्तत्त्व हूँ ।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

(११)

- १- मैं ज्ञानमात्र हूँ, मुझमें किसी अन्यका प्रवेश नहीं, अतः निर्भार (भाररहित) हूँ ।
 २- मैं ज्ञानघन हूँ, मुझमें कोई अपूर्णता नहीं, अतः कृतार्थ हूँ ।
 ३- मैं ज्ञानस्वभाव हूँ, स्वभाव कभी भी किसीके द्वारा दूर नहीं किया जा सकता, अतः मैं केवल निश्चल ज्ञायक हूँ ।
 ४- मैं ज्ञानपुञ्ज हूँ, मनुष्य भी नहीं हूँ, अतः मुझे लोकेषणा व लोकव्यवहारसे कोई प्रयोजन नहीं ।
 ५- मैं ज्ञानस्वरूप हूँ, मेरा परिणामन ज्ञानरूप ही होता है, मैं कल्पनामें ही अज्ञानरूप बनकर आकुलित होता हूँ । मेरा ज्ञानस्वरूप मेरी दृष्टिमें रहो, मेरा अज्ञानरूप परिणाम मत होओ मेरा ज्ञानरूप परिणाम ही होओ ।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

(१२)

- १- मैं सहज ज्ञानस्वरूप हूं, मुझमें जाननेकी वृत्ति सहज होती रहती है और जो जानना सहज होता है बस वही मात्र मेरा कार्य है ।
- २- जिसे लोकमें जानना माना जा रहा है वह तो विकार है, विकार आकुलताका उत्पादक है, विकार मत होओ, अर्थात् ऐसा यह जानना ही सारा बंद हो जाओ ।
- ३- मैं सहज आनन्दस्वरूप हूं, मेरेमें तो स्वरूपतः सहज चेतनेका ही काम है उसमें आकुलताका नाम निशान भी नहीं है ।
- ४- जिसे लोकमें आनन्द माना जा रहा है वह तो आनन्द का विकार है, विकार आकुलतारूप है, विकार मत होओ अर्थात्, यह सुखपरिणाम मत होओ ।
- ५- सहज संचेतनमें ही विशुद्ध ज्ञान है और विशुद्ध आनन्द है । मैं सहज चैतन्य स्वरूप हूं, शुद्ध चैतन्यस्वरूप हूं ।

ॐ शुद्धं चिदस्मि

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐



परमात्म-आरती



ॐ जय जय अविकारी ।

जय जय अविकारी, ॐ जय जय अविकारी
हितकारी भयहारी, शाश्वत स्वविहारी

ॐ जय जय अविकारी ॥

काम क्रोध मद लोभ न माया, समरखसुखधारी
ध्यान तुम्हारा पावन, सकल क्लेशहारी ॥ॐ॥

हे स्वभावमय जिन तुम चीना, भव संतति टारी ।
तुव भूलत भव भटकत, सहत विपत भारी ॥ॐ॥

पर सम्बन्ध बन्ध दुखकारण, करत अहित भारी ।
परम ब्रह्मका दर्शन, चहुंगति दुःखहारी ॥ॐ॥

ज्ञानमूर्ति हे सत्य सनातन, मुनिमन-संचारी
निर्विकल्प शिवनायक, शुचिगुण-भंडारी ॥ॐ॥

बसो बसो हे सहजज्ञानघन, सहज शान्ति-चारी
टलें टलें सब पातक, परबल बलधारी ॥ॐ॥

卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐 卐

आध्यात्मिक ज्ञान विज्ञानका घर बैठे सरल साधनों से लाभ लें ।

धर्म प्रेमी बन्धुओ ! आध्यात्मिक साधना प्रत्येक प्राणी करना चाहता है, प्रत्येक के मनमें अध्यात्म योग की जानकारीके लिए प्रेरणा उत्पन्न होती है, परन्तु इसकी जानकारी के लिए सरल साधन सदैव उपलब्ध नहीं रहते । अतः आत्माकी मांगको प्राणी दबा देता है ।

यदि आप सरल उपायोंसे अध्यात्मिक ज्ञान, विज्ञान व शान्ति चाहते हैं तो अध्यात्म योगी न्याय तीर्थ पूज्य श्री मनोहर जी वर्णी सहजानन्द जी महाराज द्वारा रचित साहित्यका स्वाध्याय, मनन अवश्य कीजिए ।

साहित्य मिलने के पते :—

१— खेमचंद जैन सर्राफ,
मंत्री: श्री सहजानन्द शास्त्रमाल
१८५ ए, रणजीतपुरी, सबर मेरठ (उ. प्र.)

२— सुमेरचन्द जैन,
प्रधान मंत्री: भारतवर्षीय वर्णी जैन साहित्य मंदिर
६५ प्रेमपुरी मुजफ्फरनगर

मुद्रक:—मैनेजर, जैन साहित्य प्रेस, १८५ ए, रणजीतपुरी, सबर मेरठ ।